

# जेंडर की जकड़न को तोड़ती कहानियाँ

बच्चों के साथ बातचीत

ब्रजेश वर्मा



हम देखते हैं कि हमारा समाज वर्ग, वर्ण और जेंडर के आधार पर पूरी तरह से बँटा हुआ है और समाज में इन अलग-अलग वर्गों के आपसी मेल-मिलाप का कोई जरिया भी नहीं है। इसलिए लोग एक-दूसरे के बारे में जान ही नहीं पाते। हमारी स्कूली व्यवस्था भी इस अलगाव को तोड़ने में कोई मदद नहीं करती। स्कूल में जेंडर के मुद्दों पर बातचीत की बहुत सम्भावनाएँ हैं किन्तु यहाँ इन मुद्दों पर ज्यादा चर्चाएँ होती ही नहीं हैं। चूँकि घरों में भी इन मसलों पर बात की कोई गुंजाइश नहीं है, इस कारण

बचपन से ही बच्चों में अपने आसपास की दुनिया और दिन प्रतिदिन के अनुभवों की वजह से जेंडर को लेकर अधिकांशतः नकारात्मक विचार पनपते रहते हैं। मौजूदा समाज में समलैंगिकता, थर्ड जेंडर, क्वेर जैसे मुद्दों पर बात करना तो बिलकुल भी उचित नहीं समझा जाता। बच्चों से इन मसलों को हमेशा छुपाया जाता है। इन सभी कारणों से बच्चों में जेंडर और यौनिकता के बारे में व्यापक समझ विकसित नहीं हो पाती, बल्कि इसके विपरीत, बहुत-सी भ्रान्तियाँ पैदा हो जाती हैं।

समाज में लड़कों को अलग तरह से तैयार किया जाता है और लड़कियों को अलग तरह से। इन विषयों पर चर्चा और जानकारी के अभाव में लड़के-लड़की के लिए 'तय सामाजिक मापदण्डों' से 'अलग तरह से रहने वाले' लोगों के प्रति बच्चे संवेदनशील नहीं बन पाते और यह क्रम लगातार चलता रहता है।

### साहित्य में सम्भावनाएँ

ऐसी स्थिति में जहाँ सामाजिक विभेद के कारण इन्सानों की दुनिया में लोग अपने से अलग लोगों व समुदायों से मिल नहीं पाते, साहित्य की दुनिया अपने से अलग व्यक्तियों और समुदायों को समझने और जानने का एक माध्यम बन सकती है। बच्चों को मिलने वाला विविधतापूर्ण साहित्य, इसमें एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है और हम सभी को इस दिशा में संवेदनशील बना सकता है।

आम तौर पर बच्चों को राजा-रानी, जंगल और जानवर, परियों, भूतों आदि की कहानियाँ आसानी-से पढ़ने को मिल जाती हैं किन्तु समाज के सभी वर्गों की आवाज़ को बराबरी से जगह देने वाले साहित्य की कमी अक्सर खलती है। जिस तरह की गैरबराबरी हमें समाज में दिखती है, वही चुप्पी हमें साहित्य में भी दिखाई देती है। हाशियाकृत समुदायों, मुस्लिम, दलित, विमुक्त घुमक्कड़ समुदायों आदि के जीवन को उनकी

सम्पूर्णता में प्रस्तुत करने वाला साहित्य, हमें विरले ही देखने को मिलता है। इसी प्रकार समाज के कुछ खास वर्गों जैसे समलैंगिक, किन्नर, क्वेर इत्यादि समुदायों का प्रतिनिधित्व करने वाला साहित्य, हमें बाल साहित्य की दुनिया में दिखाई ही नहीं देता। इस वजह से बच्चे इन समुदायों के बारे में साहित्य के माध्यम से भी जान नहीं पाते और उनके मन में तरह-तरह की भ्रान्तियाँ घर कर जाती हैं और वे अक्सर जीवन भर इन भ्रान्तियों से बाहर नहीं निकल पाते।

परन्तु यह भी देखा गया है कि यदि इन मुद्दों पर बच्चों के साथ शुरुआत से ही चर्चा की जाए तो बच्चों की सोच में एक पर्याप्त विस्तार आ सकता है और वे उन लोगों को भी खुलेपन से स्वीकार कर सकेंगे जो खुद को अपनी सामाजिक पहचान से अलग हटकर महसूस करते हैं और अपनी शर्तों पर जीना चाहते हैं। इस सन्दर्भ में मैं अपने कुछ अनुभव प्रस्तुत कर रहा हूँ।

### अलग-सी कहानियों पर चर्चा

लाइब्रेरी क्लास में बच्चों के साथ जेंडर के ढाँचे को तोड़ने के लिए मैंने इन विषयों पर आधारित कुछ कहानियाँ चुनीं व पढ़ीं और इन विषयों पर बच्चों के विचार जानने की कोशिश की। *एकलव्य* द्वारा प्रकाशित रिनचिन की कहानी, 'अजूबा' (2018), *मुस्कान* द्वारा प्रकाशित कनक शशि

## कहानियों का परिचय

**गुठली कैन फ्लाइ (कनक शशि)** - गुठली ने एक लड़के के रूप में जन्म लिया किन्तु वह खुद को एक लड़की की तरह महसूस करती है, दिवाली पर उसके फ्रॉक पहनने पर माँ-पिताजी नाराज़ हो जाते हैं; भाई-बहन उसका मज़ाक उड़ाते हैं। गुठली दुखी व अकेला महसूस करती है, और शान्त रहकर अपना विरोध दर्शाती है। अन्त में, माँ उसे एक फ्रॉक गिफ्ट करती है जिसे पहनकर गुठली बहुत खुश होती है।

**अजूबा (रिनचिन)** - इस कहानी में 'पानी' एक पात्र है जिसे गाँव के लोग नर्सरी में रहने कि अनुमति देते हैं, लेकिन पानी का व्यवहार गाँव के लोगों को परेशान करता है। जब गाँव के लोग उसकी पहचान पूछते हैं तो वह बताता है कि चांदनी से प्यार करते वक्त वह लड़की है और राजा से प्यार करते वक्त वह लड़का है। पानी के इस व्यवहार से परेशान होकर गाँव के लोग उसे गाँव से चले जाने को कहते हैं।

**नवाब से नंदनी (माया शर्मा)** - यह कहानी एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जो शरीर से तो मर्द है किन्तु उसकी पहचान आदमी की नहीं है, उसकी चाल-ढाल सब औरतों की तरह है। ट्रांस जेंडर की सच्चाई को बताती यह कहानी, जेंडर को आदमी और औरत के दो खाँचों में बाँटने को चुनौती देती है।

की कहानी 'गुठली कैन फ्लाइ' (2019) और *निरंतर* द्वारा प्रकाशित माया शर्मा की कहानी 'नवाब से नंदनी' (2006) जैसी किताबें बच्चों के साथ पढ़कर, उन पर चर्चा की गई।

चर्चा में भोपाल शहर की कच्ची बस्तियों में रहने वाले गोंड, पारधी, ओझा-गोंड और दलित, कंजर एवं अन्य विमुक्त जातियों के बच्चे शामिल थे जो *मुस्कान* द्वारा संचालित स्कूल 'जीवन शिक्षा पहल' में नियमित रूप से पढ़ने आते हैं। बच्चों की उम्र लगभग 15 से 18 साल के बीच थी। बच्चों के माता-पिता असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले दिहाड़ी मज़दूर हैं जो गड़ढे खोदने, कचरा बीनने व

नगर निगम की कचरा गाड़ी पर काम करते हैं। ये बच्चे अपनी और परिवार की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए पढ़ाई के साथ-साथ सुबह और शाम काम करने भी जाते हैं। कुछ बच्चे कचरा चुनने का काम करते हैं तो कुछ बारात में लाइट पकड़ने का, और कुछ बच्चे शादी-पार्टी में खाना परोसने का काम करते हैं। बच्चे सुबह जल्दी उठकर कचरा बीनने का अपना काम खत्म करके, पढ़ाई करने के लिए *मुस्कान* स्कूल आ जाते हैं।

बच्चों ने इन किताबों को पढ़कर, अपने विचारों और अपने व दोस्तों के अनुभवों को साझा किया। इस अनुभव से समझ में आया कि मौका मिलने पर

उनकी चर्चा, समझ और अनुभव का दायरा कितना व्यापक हो सकता है।

‘अजूबा’ कहानी के किरदार पानी से जुड़ाव बना पाने में बच्चों को थोड़ी मुश्किल आ रही थी, लेकिन फिर भी वे एक व्यक्ति के तौर पर उसे स्वीकार करने के लिए तैयार थे।

इस कहानी पर अपनी बात रखते हुए राजा ने कहा, “यह तो समझ आता है कि कोई लड़की, लड़की को पसन्द करती है और कोई लड़का, किसी लड़के को पसन्द करता है। ऐसे कई लोग मैंने अपने आसपास देखे हैं। लेकिन ‘पानी’ तो अलग है, वह लड़के के साथ लड़का और लड़की के साथ लड़की जैसा महसूस करता है। वह लड़का और लड़की, दोनों से प्रेम करता है। थोड़ा अजीब लग रहा है कि ऐसा कैसे हो सकता है। लेकिन पानी समाज को एक सन्देश दे रहा है कि हमें अपनी इच्छा के अनुसार जीने का हक है। किसी को अपनी तरह से रहने और जीने की मनाही नहीं होनी चाहिए। लोग ‘पानी’ को ‘पानी’ की तरह रहने से रोकते हैं क्योंकि पानी की वजह से समाज का जेंडर का किला ढहने लगा था। पानी समाज की सोच बदलने वाला व्यक्ति है।”

वहीं इस विषय पर मंदिप पवार ने लिखा, “पानी जैसे लोग होंगे तो समाज में बहुत बदलाव होंगे और लोगों की धारणाएँ और पूर्वाग्रह भी टूटेंगे। पानी बच्चों को सोचने और

प्रश्न करने वाला बनाता है। पानी के साथ खेलने से गाँव के बच्चे भी सवाल करने लगे थे, इस बात से भी गाँव के लोग परेशान होने लगे थे। सवाल करने वालों को हमेशा खराब माना जाता है। पानी जैसे लोगों को जीने में बहुत दिक्कत आती है। ये कहानी हिम्मत देती है।”

इस चर्चा में बहुत-से बच्चों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। उनमें से कुछेक की कही बातें आपसे साझा कर रहा हूँ।

• “मुझे कहानी ‘गुठली कैन फ्लाई’ में यह अच्छा लगा कि गुठली ने अपनी पहचान या वह जैसे रहना चाहती है, को अपनी माँ और घर वालों से डाँट खाने के बाद भी नहीं बदला। हम लड़के हों या लड़की, यह ज़्यादा महत्व नहीं रखता, महत्व यह रखता है कि हम खुद को कैसा मानते हैं, हम क्या महसूस करते हैं, हम अपनी पहचान को खुद कैसे देखते हैं। हर व्यक्ति को समाज में जगह और सम्मान मिलना चाहिए।” - करीना

• “इन्सान अपनी ज़िन्दगी जिस तरह से जीना चाहे, उसे उस तरह से जीने का हक होना चाहिए, लोग कौन होते हैं किसी की ज़िन्दगी के बारे में तय करने वाले। कोई लड़का यदि लड़की की तरह रहना चाहे या कोई लड़की लड़के की तरह रहना चाहे तो उसे वैसे ही रहने का हक है। लेकिन हम देखते हैं



कि समाज हर तरह की रोक-टोक करता रहता है। ऐसे कपड़े मत पहनो, ऐसे मत चलो, ऐसे मत बात करो, लड़की हो तो ज़रा धीरे बात करो - ऐसी बातें हर किसी को सुनने को मिलती हैं। हमें समाज में या तो लड़के की तरह रहना होता है या लड़की की तरह, नहीं तो घर और समाज के दरवाज़े हमारे लिए बन्द हो जाते हैं।”

- “जब तक हम समाज द्वारा बनाए नियमों को मानते रहेंगे, हम अच्छी लड़की या अच्छा लड़का होंगे किन्तु यदि हम समाज द्वारा बनाए इन नियमों के बाहर जाकर सोचेंगे, अपने हिसाब से अपनी ज़िन्दगी जीना चाहेंगे तो हम उसी समय परिवार व समाज के लिए खराब/ बिगड़े हो जाएँगे।” इस पर बच्चों ने कहा कि “भले ही समाज हमारा विरोध करे, लेकिन हमारे परिवार

के लोगों को तो हमारा साथ देना चाहिए।”

- एक लड़की ने कहा, “मेरा एक दोस्त है जो गुठली की ही तरह लड़कियों वाले कपड़े पहनना और सजना चाहता है। वह घर के काम करता है और उसे लड़कियों के साथ खेलना अच्छा लगता है लेकिन उसके पापा उसको बहुत डाँटते हैं, कहते हैं कि ‘समाज में नाक कटवाएगा क्या?’ वह अकेला उदास रहता है। बस्ती के लोग व उसके दोस्त भी उसे लड़की-लड़की कहकर चिढ़ाते हैं। कहते हैं, ‘देखो, कैसा मटक-मटक कर चलता है, हाथ हिला-हिला कर बात करता है। अपने बालों को लड़कियों की तरह गूँथता है, चोटी रखता है। अब हमें महसूस हो रहा है कि वह खुद को कितना अकेला पाता होगा। उसकी भावनाओं को समझने के लिए

किसी के पास फुर्सत नहीं। हमें उसका साथ देना चाहिए और उसको अकेलेपन से बाहर निकालने के लिए मदद करनी चाहिए।”

- नम्रता (परिवर्तित नाम) का कहना था कि “ऐसा लग रहा था मानो मेरी ही कहानी चल रही हो। जींस, टी-शर्ट पहनने पर मुझे भी लोग कहते हैं कि ‘तू लड़की है, लड़की की तरह सलवार-कुर्ती पहना कर। ये क्या लड़कों की तरह कपड़े पहनकर घूमती है, सिर पर दुपट्टा रखा कर। ये तो समाज में हमारी बदनामी करवाएगी।’ इस कहानी को पढ़कर मुझे अपनी बात कहने की हिम्मत आई। बहुत-से लोग हैं जो मेरी तरह सोचते हैं, जो अपनी एक अलग पहचान के साथ जीना चाहते हैं।”

समाज का बदलना बहुत ही कठिन है, परन्तु मुझे लगता है कि हम इतना तो कर सकते हैं कि गुठली, पानी या नवाब जैसे व्यक्ति अपने आपको जो समझते हैं, उनको वैसा ही समझें। अगर वह लड़का है और लड़की की तरह महसूस करता है तो उसे लड़की ही मानना चाहिए, और यदि लड़की खुद को लड़के की तरह महसूस कर रही है तो उसे लड़का ही माना जाए, न कि उसे किसी ‘अन्य’ का नाम दे दिया जाए।

## सघन प्रयासों की ज़रूरत

बच्चों का कहना था कि इस तरह की और कहानियाँ लिखी जानी चाहिए ताकि लोगों में अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने की हिम्मत आ पाए और वे अपने तरीके से अपनी ज़िन्दगी जी पाने में सक्षम बन पाएँ, अपनी पहचान ज़ोर-से लोगों के सामने बता पाएँ। साथ ही, इससे अन्य लोगों में भी ऐसे लोगों के प्रति सम्मान का भाव पनपेगा जो समाज द्वारा दी गई पहचान के विपरीत जीना चाहते हैं। समाज में उनके लिए जगह बनेगी व उनका मज़ाक नहीं उड़ाया जाएगा। बच्चों में सामाजिक नियमों के प्रति एक तरह का गुस्सा भी दिख रहा था और कुछ बच्चे इन नियमों को तोड़ देने की बात कह रहे थे।



हम अपने आसपास के समाज में किन्नर समुदाय या समलैंगिकों के प्रति एक नकारात्मकता व अस्वीकार्यता का भाव देखते हैं। किन्तु ये कहानियाँ सभी को सम्मान, स्वाभिमान के साथ जीने व बराबरी का स्थान देने की बात कहती हैं। इन्हें बच्चों के साथ पढ़ने और चर्चा के बाद लगता है कि ये कहानियाँ बच्चों में एक नई सोच के दरवाज़े खोलने वाली बेहतरीन कहानियाँ हैं। आम तौर पर समाज में जिन मुद्दों पर संवाद की कोई भी जगह नहीं होती, ये कहानियाँ ऐसे मुद्दों पर संवाद की जगह बनाती हैं और संकुचित सामाजिक मान्यताओं को कठघरे में खड़ा करती हैं। इस तरह की कहानियाँ समाज के तय

ढाँचे से बाहर निकलने व अपनी तरह से ज़िन्दगी जीने की आज़ादी की वकालत करती हैं व जेंडर और यौनिकता के दायरों को तोड़ने का काम करती हैं।

बच्चों के बीच यदि शुरुआत से ही इन मुद्दों पर चर्चा की जाए तो यह उन्हें परिपक्व होने व एक तार्किक सोच वाला इन्सान बनने में मदद करेगी। जो बच्चे या बड़े खुद को समाज की दी हुई पहचान से हटकर, कुछ अलग महसूस करते हैं, वे खुद को अभिव्यक्त कर पाएँगे और समाज द्वारा बनाई लड़के या लड़की की परिभाषा के तय खाँचे में खुद को ढालने के दबाव से शायद कुछ हद तक बाहर निकल पाएँगे।

**ब्रजेश वर्मा:** वर्तमान में *मुस्कान* संस्था, भोपाल द्वारा संचालित स्कूल 'जीवन शिक्षा पहल' में शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। हशियाकृत समुदाय मुख्यतः दलित, आदिवासी, विमुक्त और मुस्लिम समुदायों के बच्चों के साथ सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में शामिल हैं। बच्चों को कहानियाँ सुनाना, उनके साथ खेलना पसन्द है।

ई-मेल: [brijeshverma3@gmail.com](mailto:brijeshverma3@gmail.com)

**सभी चित्र: उबिता लीला उन्नी:** डिज़ाइनर व चित्रकार हैं। इन्हें बच्चों और बच्चों की कहानियों के साथ काम करना बहुत पसन्द है। वर्तमान में *एकलव्य* के डिज़ाइन समूह के साथ फ़ैलोशिप के तहत काम कर रही हैं।

